



डीआरडीओ

डी आर डी ओ की मासिक गृह पत्रिका

समाचार

64वें गणतंत्र दिवस परेड में डी आर डी ओ का शक्ति प्रदर्शन

इस वर्ष की गणतंत्र दिवस परेड में जल तथा स्थल दोनों पर समान रूप से चल सकने वाले बख्तरबंद डोजर तथा वायुवाहित पूर्व चेतावनी तथा नियंत्रण प्रणाली एवं भारतीय नौसेना के लिए विकसित की गई उन्नत सोनार प्रणालियों को प्रदर्शित करने वाली दो झांकियों सहित डी आर डी ओ द्वारा भारत के अत्याधुनिक लंबे रेंज के बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि-5 का प्रदर्शन लोगों के आकर्षण का मुख्य केंद्र रहा। डी आर डी ओ के दल का नेतृत्व वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी आर डी ई), अहमदनगर में तैनात लेफ्टिनेंट कर्नल जगबीर जगलान ने किया।

अग्नि-5 मिसाइल एक उन्नत लंबी रेंज का सतह से सतह पर मार करने वाला बैलिस्टिक मिसाइल है जिसे एक पूर्णतः सुसज्जित सड़क-सचल लांचर से मिनटों में लांच किया जा सकता है। यह भारत का सर्वाधिक उन्नत सामरिक मिसाइल है जिसमें अनेक नई स्वदेश- विकसित

प्रौद्योगिकियां प्रयोग में लाई गई हैं जो अति उच्च स्तर की परिशुद्धता तथा विश्वसनीयता को सुनिश्चित करती हैं। अग्नि-5 के प्रक्षेपण से भारत इस प्रकार की अवरोधक क्षमता रखने वाले उन्नत देशों के विशिष्ट समूह में शामिल हो गया है।

इस अंक में

- 64वें गणतंत्र दिवस परेड में डी आर डी ओ का शक्ति प्रदर्शन
- सौवें भारतीय विज्ञान कांग्रेस में डी आर डी ओ की प्रदर्शनी
- रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार द्वारा अनुसंधान एवं नवप्रवर्तन केंद्र का उद्घाटन
- नवीन विकास
- राष्ट्रीय अभिकल्प पुरस्कार-2012
- मानव संसाधन विकास गतिविधियां
- कार्मिक समाचार
- स्थापना दिवस/वार्षिक दिवस समारोह
- डी आर डी ओ की प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारो अतिथिगण



गणतंत्र दिवस परेड के दौरान डी आर डी ओ का शक्ति प्रदर्शन।

जल तथा स्थल दोनों पर चल सकने वाला बख्तरबंद डोजर स्वदेश में विकसित किया गया एक विविध उपयोगी संग्राम-अभियंता-समर्थित उपकरण है जो स्थल पर और साथ ही जल और स्थल दोनों परिस्थितियों में अति उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकता है। बी एम पी-II वाहन पर आधारित यह डोजर निकट तथा दूरस्थ तटबंध में कमी लाने के लिए उपयोगी है। यह जल क्षेत्रों में आसानी से तैर सकता है और साथ ही स्थल, मरुभूमि तथा अंतःस्थलीय नदी जल क्षेत्रों में भी मैकेनाइज्ड फॉरमेशनों द्वारा किए गए प्रचालनों की सहायता से अन्य संबद्ध कार्यों का निष्पादन कर सकता है। वायुवाहित पूर्व चेतावनी तथा नियंत्रण (ए ई डब्ल्यू एंड सी) प्रणाली अपनी श्रेणी का सरलतम तथा सर्वाधिक कम व्यय पर तैयार की गई वायुवाहित पूर्व चेतावनी प्रणाली है। इस प्रणाली का स्वदेश में विकास किया गया है तथा इसे भारतीय वायु सेना की वर्तमान एवं भावी प्रचालनात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विकसित किया गया है। यह

प्रणाली ब्राजील के एम्बेयर वायुयान पर आरोपित की गई है जिसमें डी आर डी ओ द्वारा विकसित की गई विभिन्न मिशन प्रणालियों के संस्थापन हेतु व्यापक आशोधन किया गया है।

नौसेना की सोनार प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करने वाली झांकी द्वारा डी आर डी ओ की नौसेना प्रयोगशालाओं के सोनार तथा पनडुब्बी-रोधी युद्ध प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लिए किए गए योगदान को प्रदर्शित किया गया। इसमें नई पीढ़ी का पोत खोल आरोपित पोत सोनार (एच यू एम एस ए-एन जी) युक्त नौसेना में प्रयोग में लाए जाने वाले अनेक फ्रिगेट अर्थात् छोटे तेज गति से चलने वाले पोत, वायुवाहित निम्न फ्रीक्वेंसी के निमज्जन सोनार तथा पोतवाहित कर्षित व्यूह सोनार प्रदर्शित किए गए जिन्हें समुद्र में ध्वनिक संचरण तकनीकों के माध्यम से निगरानी के लिए विभिन्न गहराइयों पर प्रचालित किया जा सकता है।

सौवें भारतीय विज्ञान कांग्रेस में डी आर डी ओ की प्रदर्शनी



डी आर डी ओ पैविलियन में माननीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान मंत्री श्री जयपाल रेड्डी।



प्रदर्शनी में प्रदर्शित डी आर डी ओ द्वारा विकसित मिसाइलों के मॉडल।

डी आर डी ओ ने रक्षा विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अत्याधुनिक आयुध प्रणालियों, सैन्य उपकरणों तथा सैन्य सहायक प्रणालियों के स्वदेश में अभिकल्पन, विकास तथा उत्पादन को प्रेरित करने के लिए भारत के सामर्थ्य की एक झांकी प्रदर्शित की। भारत बहुस्तरीय सामरिक अवरोधक क्षमताओं से सुसज्जित विश्व के चार देशों तथा अपना स्वयं का बैलिस्टिक मिसाइल प्रतिरक्षा (बी एम डी) कार्यक्रम चलाने वाले विश्व के पांच देशों, अपने स्वयं के मुख्य युद्धक टैंक (एम बी टी) विकसित करने वाले 6 देशों, स्वदेश-निर्मित चौथी पीढ़ी के युद्धक

विमानों को रखने वाले 7 देशों तथा अपने स्वयं के इलेक्ट्रॉनिक युद्ध एवं मल्टीरेंज रडार कार्यक्रम चलाने वाले चुनिंदा कुछ देशों की श्रेणी में शामिल है। राष्ट्र निर्माण में डी आर डी ओ के योगदान को 3-7 जनवरी 2013 के दौरान कोलकाता में आयोजित सौवें भारतीय विज्ञान कांग्रेस में "प्राइड ऑफ इंडिया एग्जिबिशन" के दौरान जीवंत प्रदर्शनों, मॉडलों, फिल्मों और पोस्टरों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया।

इस अवसर पर मध्यम रेंज के सामरिक मिसाइल अग्नि-IV, एम बी टी अर्जुन तथा नाग, आकाश, ब्रह्मोस,

पृथ्वी जैसे सामरिक मिसाइलों, हलके युद्धक विमान तेजस, मानवरहित वायुयानों, रडारों, नाइटविज़न उपकरणों, रोबोट प्रणालियों एवं 100 अन्य प्रणालियों के आउटडोर मॉडलों का भी प्रदर्शन किया गया।

डी आर डी ओ ने साहा नाभिकीय भौतिकी संस्थान में 04 जनवरी 2013 को रक्षा विज्ञान की परिसीमाएं (फ्रंटियर्स ऑफ डिफेंस साइंस) विषय पर आयोजित एक विशेष जन संपर्क सत्र में विद्यार्थियों तथा जनता को डी आर डी ओ के चोटी के वैज्ञानिकों के साथ परस्पर बातचीत का भी एक अद्वितीय अवसर उपलब्ध कराया। इस पारस्परिक संपर्क सत्र का आयोजन डॉ वी भुजंगराव, विशिष्ट वैज्ञानिक (डी एस) तथा मुख्य नियंत्रक (सी सी)

अनुसंधान तथा विकास (नौसेना प्रणाली), डी आर डी ओ मुख्यालय के नेतृत्व में किया गया था।

रक्षा वैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत किए गए वैज्ञानिक नवप्रवर्तनों को विश्व स्तरीय उत्पादों में बदलने में भारतीय उद्योग, जिसमें लघु तथा मध्यम उद्यम शामिल हैं, ने अत्यधिक योगदान किया है। कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता के नैनो प्रौद्योगिकी परिसर में 05 जनवरी 2013 को "साइडलाइन्स ऑफ दै कांग्रेस" विषय पर आयोजित एक विचारगोष्ठी में श्री सुंदरेश, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (आयुध तथा संग्राम इंजीनियरी तथा सेवा अन्योन्यक्रिया), डी आर डी ओ मुख्यालय ने रक्षा अनुसंधान तथा विकास एवं उत्पादन-भारतीय उद्योगों हेतु अवसर विषय पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया।

रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार द्वारा अनुसंधान एवं नवप्रवर्तन केंद्र का उद्घाटन



डॉ वी के सारस्वत, अनुसंधान एवं नवप्रवर्तन केंद्र का उद्घाटन करते हुए।



नवनिर्मित अनुसंधान एवं नवप्रवर्तन केंद्र।

एक नई पहल करते हुए, डी आर डी ओ ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी)-मद्रास, चेन्नई के अनुसंधान पार्क में एक अनुसंधान एवं नवप्रवर्तन केंद्र (आर आई सी) की स्थापना की है। आर आई सी 36000 वर्ग फुट क्षेत्र में फैला हुआ है जिसमें अनेक अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों के निष्पादन हेतु उपयोगी प्लेटफार्म निर्मित किए गए हैं तथा यह केंद्र विभिन्न प्रयोगशालाओं के मेधावी युवा वैज्ञानिकों को अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों को विकसित करने का कार्य एक ही स्थान पर करने की सुविधा उपलब्ध कराएगा।

रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार डॉ वी के सारस्वत ने 28 दिसंबर 2012 को इस केंद्र का उद्घाटन किया। यह केंद्र शिक्षा जगत, उद्योग एवं अनुसंधान छात्रों के साथ सन्निकट सहयोग स्थापित करते हुए निर्देशित अनुसंधान कार्य करने के लिए नए आयाम प्रस्तुत करेगा।

आरंभ में, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान-मद्रास, चेन्नई के सहयोग से अर्धचालक युक्तियों, उड्डयानिकी हेतु चिप अभिकल्पन, अनुवर्तित वाहन प्रणालियों, वाक् अभिज्ञान, पदार्थों की सूक्ष्म संरचना के प्रतिरूपण तथा अनुकार, ताप वैद्युत युक्तियों, नैनो ऐलुमिनियम आधारित ठोस नोदकों, गैस टरबाइन इंजन में दहन अस्थायित्व तथा सिलिकन नैनो फोटोनिक्स के क्षेत्रों में अनुसंधान कार्य किए जाएंगे।

नवीन विकास

पर्यावरण—अनुकूल असंहारक (नॉन—लीथल) स्प्रे

रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डी आर एल), तेजपुर ने भुत जलोकिया (कैप्सिकम असाभिकम) तेल रेजिन पर आधारित एक पर्यावरण अनुकूल असंहारक (नॉन—लीथल) स्प्रे विकसित किया है। इस उत्पाद को निम्न तीव्रता के युद्ध (एल आई सी) की स्थितियों में अत्यधिक जलन उत्पन्न करने वाले कारक के रूप में और साथ ही दंगा नियंत्रण, वैयक्तिक संरक्षण एवं आत्मरक्षा तथा अपराध निवारण आदि के लिए निरोधक युक्ति के रूप में प्रयोग में लाया जा सकता है। भुत जलोकिया असम सहित भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। भुत जलोकिया के कारण त्वचा पर होने वाली जलन और तीक्ष्ण अनुभूति के कारण ही इस उत्पाद को भुत जलोकिया तेल रेजिन का उपयोग करके विकसित किया गया है।



विभिन्न प्रकार के कैप्सिसप्रे ।

यह स्प्रे विभिन्न आकारों के कंटेनरों (50 मिलीलीटर के डिब्बों से लेकर 50 लीटर तक के सिलिंडरों) में उपलब्ध है। बड़े सिलिंडर दुलाई में आसानी को ध्यान में रखते हुए ट्रॉली पर आरोपित होते हैं। मध्यम आकार के सिलिंडर पीठ पर ढोने के लिए बैक पैक किए जाते हैं।

राष्ट्रीय अभिकल्प पुरस्कार—2012

डॉ पी शिवकुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई को बख्तरबंद युद्धक वाहनों के अभिकल्पन, विकास, परीक्षण तथा फील्ड मूल्यांकन के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए इंस्टिट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) के राष्ट्रीय अभिकल्प तथा अनुसंधान फोरम (एन डी आर एफ) द्वारा राष्ट्रीय अभिकल्प पुरस्कार—2012 से पुरस्कृत किया गया है। आपने यह पुरस्कार 14 दिसंबर 2012 को आयोजित 27वें इंडियन इंजीनियरिंग कांग्रेस (आई सी ई) के दौरान इंस्टिट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) के अध्यक्ष श्री एस एस राठौर के हाथों प्राप्त किया। इस कांग्रेस का उद्घाटन भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा विज्ञान भवन, नई दिल्ली में किया गया।

मृदु इस्पात के जोड़ और ऐंठनयुक्त पिन

रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी एम एस आर डी ई), कानपुर द्वारा विकसित किए गए एक विस्तारणीय ढांचा समर्थित टेंटों (तंबू) में एक नियत चौड़ाई और ऊंचाई है किंतु इसकी लंबाई 2 मीटर के चरणों में बढ़ाई जा सकती है। वर्तमान में इस टेंट का उपयोग सशस्त्र बलों द्वारा हिमाच्छादित क्षेत्रों को छोड़कर, अन्य सभी प्रकार के स्थलीय क्षेत्रों में निवास के प्रयोजन हेतु किया जा रहा है। इस तंबू में ऐलुमिनियम मिश्रधातु की नलिकाओं तथा ढाले गए जोड़ों से निर्मित ढांचा संरचना निहित होती है जो कपड़े से बने डेक के ऊपर आरोहित होती है। ऐलुमिनियम मिश्रधातु की नलिकाएं तथा जोड़ बार—बार क्षतिग्रस्त होते रहते थे और इन्हें मरम्मत करना संभव नहीं था।



डी एम एस आर डी ई ने अब अधिक मजबूत मृदु इस्पात के जोड़ तथा ऐंठनयुक्त पिनों को विकसित किया है जिन्हें ऐलुमिनियम मिश्रधातु तथा ढाले गए जोड़ों के स्थान पर उपयोग में लाया जाएगा। नए जोड़ों तथा ऐंठनयुक्त पिनों का तनन सामर्थ्य ठीक दोगुना है। ये अधिक टिकाऊ तथा सस्ते होते हैं एवं यदि प्रयोग के दौरान टूट जाएं तो इन्हें ठीक भी किया जा सकता है। इन मर्दों को व्यापक प्रयोक्ता परीक्षणों के पश्चात सेना द्वारा प्रयोग में लाए जाने के लिए स्वीकार कर लिया गया है।



मानव संसाधन विकास गतिविधियां

सम्मेलन / सेमिनार / विचार-गोष्ठी / प्रशिक्षण पाठ्यक्रम / बैठक

ऐरोस्पेस तथा संबद्ध तंत्रों पर राष्ट्रीय सेमिनार



ए आर एम एस 2012 के उद्घाटन के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए विशिष्ट जन।

आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) तथा हिंदुस्तान वैमानिकी लिमिटेड (एच ए एल) ने संयुक्त रूप से 06-08 दिसंबर 2012 के दौरान ऐरोस्पेस तथा संबद्ध तंत्र विषय पर आठवें राष्ट्रीय सेमिनार (ए आर एम एस-2012) का आयोजन किया। इस सेमिनार को अनेक सरकारी संगठनों तथा कुछ निजी उद्योगों नामतः पारस फ्लो फोरम इंजीनियरिंग लिमिटेड; हिंदुस्तान बैट्रीज लिमिटेड, टाटा पावर, आर ए पी, भारत फोर्ज लिमिटेड (बी एफ एल), प्रीमियर एक्सप्लोसिव्स लिमिटेड आदि द्वारा सह-प्रायोजित किया गया था।

श्री पी एस वीराराघवन, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र, तिरुवनंतपुरम इस उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में तथा डॉ बी एन कल्याणी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, बी एफ एल, पुणे सम्मानित अतिथि के रूप में शामिल हुए थे। श्री ए एम दातार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, ए आर डी ई तथा अध्यक्ष, इंडियन नेशनल सोसाइटी फॉर ऐरोस्पेस एंड रिलेटेड मैकेनिज्म्स (आई एन एस ए आर एम), पुणे चैप्टर ने स्वागत भाषण दिया। श्री जॉर्ज कोशी, अध्यक्ष, इंडियन नेशनल सोसाइटी फॉर ऐरोस्पेस एंड रिलेटेड मैकेनिज्म्स (आई एन एस ए आर एम) ने भी उपस्थित जनों को संबोधित किया तथा इंडियन नेशनल सोसाइटी

फॉर ऐरोस्पेस एंड रिलेटेड मैकेनिज्म्स के उद्देश्यों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

ऐरोस्पेस तथा संबद्ध तंत्र विषय पर आठवें राष्ट्रीय सेमिनार (ए आर एम एस-2012) के दौरान रक्षा तथा ऐरोस्पेस के क्षेत्र में तंत्रों में हाल में हुए विकास तथा विशेष रूप से अभिकल्पन, प्रतिरूपण, परीक्षण तथा विश्लेषण के विषय पर मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित किया गया। इस सेमिनार के दौरान 100 से भी अधिक लेख प्रस्तुत किए गए तथा इस सेमिनार में डी आर डी ओ, इसरो, इंजीनियरी कॉलेजों तथा उद्योग से आए 350 से भी अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सेमिनार के एक हिस्से के रूप में नए विकसित किए गए तंत्रों तथा उत्पादों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई थी। कार्यकारी मॉडलों के प्रदर्श तथा उद्योगों एवं अनुसंधान तथा विकास संस्थानों से तंत्रों एवं वास्तविक उत्पादों के पोस्टरों को प्रदर्शित किया गया था।

बौद्धिक संपदा अधिकार पर व्याख्यान



आई पी आर विषय पर व्याख्यान देते हुए श्री अविनाश कुमार।

पेटेंट कानूनों पर व्याख्यान देते हुए डॉ श्रीनिवासन।

संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई ने 10 दिसंबर 2012 को बौद्धिक संपदा अधिकार (आई पी आर) विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया। डॉ एस मुरलीधर, वैज्ञानिक 'एफ' एवं समन्वयक, आई पी आर, सी वी आर डी ई ने इस व्याख्यान में आए प्रतिभागियों का स्वागत किया। श्री अविनाश कुमार, अपर निदेशक, ई आर एंड आई पी आर निदेशालय, डी आर डी ओ मुख्यालय ने डी आर डी ओ के आई पी आर के अभिनिर्धारण तथा प्रबंधन विषय पर एक ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया। डॉ टी श्रीनिवासन,

आई पी आर अटॉर्नी ने पेटेंट कानूनों के संबंध में एक सिंहावलोकन प्रस्तुत किया। आपने श्रोताओं को कॉपीराइट, ट्रेड मार्क, औद्योगिक अभिकल्प, भौगोलिक संसूचन तथा पेटेंटों के बारे में विस्तार से बताया। डॉ श्रीनिवासन ने विशेष मामला अध्ययनों के साथ पेटेंट योग्य तथा पेटेंट नहीं कराने योग्य नवप्रवर्तनों के संबंध में एक विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया।

इस व्याख्यान में आए प्रतिभागियों ने वक्ताओं के साथ काफी उत्सुकतापूर्वक परस्पर बातचीत की तथा विभिन्न विषयों जैसे किसे पेटेंट कराया जा सकता है, पेटेंट दर्ज कराने की प्रक्रिया आदि जैसे विषयों पर अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त किया। श्री के श्रीनिवासन, वैज्ञानिक 'डी' ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

संगठनात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रभावी योगदान विषय पर सी ई पी

नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली ने 07-09 जनवरी 2013 के दौरान ए एल एस तथा कॉस्मेटिक अटैंडेंटों के लिए संगठन के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु प्रभावी योगदान विषय पर तीन दिवसीय सतत शिक्षा कार्यक्रम (सी ई पी) पाठ्यक्रम का आयोजन किया।

इस पाठ्यक्रम को दिल्ली स्थित डी आर डी ओ की विभिन्न प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में कार्य कर रहे ए एल एस तथा कॉस्मेटिक अटैंडेंटों को प्रशिक्षण प्रदान करने तथा उनके ज्ञान को अद्यतन बनाने के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया था तथा यह पाठ्यक्रम उन लोगों के लिए भी लाभकारी था जो विभिन्न सरकारी तथा पारिवारिक प्रतिबद्धताओं के कारण शहर नहीं छोड़ सकते। इस पाठ्यक्रम में डी आर डी ओ की सात प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं से आए 32 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस सतत शिक्षा कार्यक्रम (सी ई पी) के दौरान अनुदेशन का माध्यम हिंदी था।

डॉ आर पी त्रिपाठी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, इनमास उद्घाटन समारोह में उपस्थित हुए। डॉ राजीव विज, पाठ्यक्रम निदेशक ने प्रतिभागियों को इस पाठ्यक्रम की आवश्यकता तथा प्रयोजन के

बारे में संक्षेप में बताया। पाठ्यक्रम के दौरान शामिल किए गए विषयों में वैयक्तिक शिष्टाचार, प्रशासनिक नियम, स्वतः प्रबंधन, वित्तीय नियमावली, व्यावसायिक नैतिकता, अभिप्रेरण, प्रभावी योगदान, समय प्रबंधन और विवाद प्रबंधन आदि विषयों को शामिल किया गया था। इसमें दिल्ली स्थित इनमास, भर्ती तथा मूल्यांकन केंद्र (आर ए सी), रक्षा शरीरक्रिया एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास), रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर) से आए वैज्ञानिकों/अधिकारियों तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से आमंत्रित व्याख्याताओं ने अपने व्याख्यान दिए। पाठ्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों द्वारा प्राप्त की गई जानकारी का मूल्यांकन करने के लिए समापन समारोह के दौरान एक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ राजीव विज ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

एन पी ओ एल-उद्योग समागम 2012

नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि ने अपने हीरक जयंती समारोहों के हिस्से के रूप में 13 दिसंबर 2012 को एन पी ओ एल-उद्योग समागम 2012 (एन आई एम-2012) का आयोजन किया। इस कार्यक्रम को आयोजित करने के विभिन्न उद्देश्यों में उद्योगों के साथ पारस्परिक संबंध स्थापित करना, एन पी ओ एल की प्रमुख परियोजनाओं में उल्लेखनीय योगदान करने वाले उद्योगों को सम्मानित करना तथा उद्योगों को अपने संबद्ध उद्योगों तथा अंतिम प्रयोक्ता के लाभ के लिए प्रदर्शनी के माध्यम से अपने विशिष्ट क्षेत्र में विशेषज्ञता को प्रदर्शित करने का अवसर उपलब्ध कराना भी शामिल था। एन आई एम-2012 ने बी 2 बी बैठकों के आयोजन को भी सुकर बनाया।

डॉ के तमिलमणि, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा मुख्य कार्यपालक, सैन्य उड़नयोग्यता तथा प्रमाणीकरण केंद्र



मुख्य सम्बोधन देते हुए डॉ तमिलमणि।

(सेमीलेक), बेंगलूरु ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने प्रमुख भाषण में आपने अनुसंधान तथा विकास के क्षेत्र में निजी उद्योगों की प्रतिभागिता की आवश्यकता तथा डी आर डी ओ/एन पी ओ एल में उपलब्ध अवसंरचना सुविधाओं के उपयोग की आवश्यकता पर बल दिया। इस कार्यक्रम में 63 उद्योगों से आए लगभग 100 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में मैसर्स लार्सन एंड टुर्बो, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, केलट्रॉन, कोल ई एल, त्रिकाश टेक्नोलॉजीज, सिका इंटरप्लॉट सिस्टम्स तथा मिस्ट्रल जैसे जाने-माने उद्योगों से प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर उद्योगों, उनके उत्पादों तथा प्रमुख सक्षमताओं के विषय पर एक पुस्तिका का भी विमोचन किया गया।

एन आई एम-2012 ने उद्योगों तथा अधिक सक्रिय रूप से कार्य कर रहे अनुसंधान तथा विकास प्रयासों के बीच समन्वय स्थापित करने के लिए एक उपयुक्त मंच प्रदान किया। इस समारोह में नौसेना की आवश्यकताओं के अनुरूप सोनार प्रणालियों के उत्पादन, विपणन तथा अनुरक्षण के क्षेत्र में उद्योगों को एक संघ स्थापित करने का अवसर भी प्रदान किया। डॉ ओ आर नंदगोपन, वैज्ञानिक 'जी' एन आई एम-2012 के संयोजक थे।

नयन-12, एक फोटोग्राफी प्रदर्शनी



डॉ ए के सिंह, निदेशक, मानव संसाधन विकास तथा री नारायण प्रदर्शनी को देखते हुए। (बायें से)

एन पी ओ एल, कोच्चि ने अपने हीरक जयंती समारोहों के एक हिस्से के रूप में 13-15 दिसंबर 2012 के दौरान नयन-12 नामक एक फोटोग्राफी प्रदर्शनी का भी आयोजन किया। इसमें एन पी ओ एल के कर्मचारियों, एन पी ओ एल से सेवानिवृत्त कर्मिकों और उनके परिवार के सदस्यों, एन पी ओ एल द्वारा प्रायोजित विद्यालय भवन

वरुण विद्यालय के छात्रों और उनके माता-पिता, तथा मीडिया कर्मिकों के लिए एन पी ओ एल की उपलब्धियों तथा विगत की स्मृतियों से संबंधित एक दृश्य प्रदर्शनी आयोजित की गई। डॉ ए के सिंह, निदेशक, मानव संसाधन विकास, डी आर डी ओ मुख्यालय ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया तथा संगठन की संक्षिप्त रूपरेखा को प्रदर्शित करने वाले अद्वितीय चित्रों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इस प्रदर्शनी के दौरान संगठन के द्वारा प्राप्त की गई महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्रदर्शित करते हुए 300 से भी अधिक चित्रों की प्रदर्शनी आयोजित की गई थी। इसमें एन पी ओ एल के विभिन्न पहलुओं जैसे कि पुराने तथा नए तकनीकी परिसर, पुरस्कार तथा मान्यताएं, सुविधाएं, विशिष्ट जनों के दौरे, परियोजना परीक्षणों की झांकी, प्रदर्शनियों के माध्यम से आम जनता के साथ अन्योन्य संपर्क, घटनाओं तथा समारोहों, राजभाषा संबंधी उपलब्धियों तथा वरुण विद्यालय से संबंधित उल्लेखनीय घटनाओं पर बल दिया गया था। इस प्रदर्शनी ने विगत के महत्वपूर्ण क्षणों की सुखानुभूति करने का अवसर प्रदान किया। इसने मीडिया कवरेज के माध्यम से संगठन की छवि निर्मित करने के लिए भी एक मंच प्रदान किया।

नौसंचालन तथा संचार संबंधी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन-2012

डी आर डी ओ तथा नौसंचालन इलेक्ट्रॉनिकी से संबंधित अनुसंधान तथा परीक्षण एकक (एन ई आर पी यू), उस्मानिया विश्वविद्यालय ने 20-21 दिसंबर 2012 के दौरान संयुक्त रूप से उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद में नौसंचालन तथा संचार संबंधी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन-2012 (नैवकॉम-2012) का आयोजन किया। रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार डॉ वी के सारस्वत ने इस सम्मेलन का उद्घाटन किया। बाद में इस सम्मेलन की मुख्य-मुख्य बातों के संबंध में पत्रकारों से बातचीत करते हुए डॉ सारस्वत ने कहा, "साइबर हमलों तथा खतरों को रोकने के लिए लक्षित भारत की अपनी प्रचालन प्रणाली (ओ एस) तीन वर्षों के भीतर तैयार हो जाएगी। विगत डेढ़ वर्षों से लगभग 150 वैज्ञानिक और इंजीनियर इस परियोजना पर अलग-अलग स्थानों पर कार्य कर रहे हैं।"

डॉ सारस्वत ने यह भी कहा कि भारतीय प्रचालन प्रणाली एक बृहत साइबर सुरक्षा उपलब्ध कराने के प्रयास के हिस्से के रूप में विकसित की जा रही है और इस

कारण इसके लिए एक बड़े पैमाने पर हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर प्रणालियों की आवश्यकता है। इससे पूर्व सम्मेलन को संबोधित करते हुए श्री अविनाश चंद्र, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (एम एस एस) ने कम लागत पर नौसंसूचन प्रणालियों को विकसित करने का आह्वान किया। आपने कहा कि डी आर डी ओ सैन्य तथा नागरिक दोनों क्षेत्रों में प्रयोग के लिए व्यापक अनुप्रयोगों से युक्त एक नए प्रकार की प्रणाली विकसित कर रहा है तथा एम ई एम एस आधारित प्रणालियों को विकसित करने के लिए अपनी संंधानशालाओं का उन्नयन किया है।

श्री ए एस गणेशन, परियोजना निदेशक, नौसंसूचन प्रणाली, इसरो उपग्रह केंद्र, बेंगलूरु ने यह सूचित किया कि जी पी एस समर्थित भू-संवर्धित नौसंचालन (गगन) प्रणाली प्रयोक्ताओं के लिए अगले पंचांग वर्ष की तीसरी तिमाही तक तैयार हो जाएगी। आपने यह भी कहा कि सात उपग्रहों के समूह वाली भारतीय क्षेत्रीय नौसंचालन उपग्रह प्रणाली (आई आर एन एस एस) के वर्ष 2015 के अंत तक तैयार हो जाने की आशा है।

श्री जी सतीश रेड्डी, सह-निदेशक, अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद ने यह सूचित किया कि भारत लघु तथा दीर्घ रेंज के मिशनों के लिए उच्च परिशुद्धता से युक्त नौसंचालन प्रणालियों को विकसित करने में उन्नत राष्ट्रों के समकक्ष है। उस्मानिया विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रोफेसर एस सत्यनारायण ने भी इस अवसर पर अपना व्याख्यान दिया। प्रोफेसर ए डी शर्मा, निदेशक, एन ई आर टी यू ने अपने आरंभिक भाषण में कहा कि डी आर डी ओ तथा एन ई आर टी यू के बीच सहयोग के फलस्वरूप नौसंसूचन प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में एक नए युग का आरंभ हुआ है। इस सम्मेलन में इजरायल, फ्रांस, रूस और आस्ट्रेलिया सहित विभिन्न देशों से आए 350 से भी अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

श्री एस जयपाल रेड्डी, केंद्रीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान मंत्री ने इस सम्मेलन के समापन समारोह की अध्यक्षता की। आपने अनुसंधान संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों से प्रौद्योगिकीय चुनौतियों का पूर्वानुमान लगाने तथा देश की रक्षा एवं सुरक्षा के लिए स्वदेश में ही अत्याधुनिक नौसंचालन एवं संचार प्रणालियों को विकसित करने की अपील की। श्री रेड्डी ने इस बात पर बल दिया कि भारत रक्षा तथा असैन्य उद्योगों की असंख्य आवश्यकताओं तथा मूल्यवर्धित सेवाओं को प्रदान करने

के लिए अभियांत्रिकी कार्यबल को तैयार करने के लिए एक आदर्श देश है। आपने प्रभावी संचार प्रणालियों को विकसित करने के महत्त्व का विशेष रूप से उल्लेख किया और कहा कि आउटसोर्सिंग से संपूर्ण विश्व में व्यवसाय का तीव्र गति से विकास संभव हुआ है। श्री रेड्डी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि देश को अन्य देशों से प्राप्त की गई प्रौद्योगिकियों को समझने के अतिरिक्त अपनी स्वयं की प्रौद्योगिकियों को भी विकसित करना चाहिए।

राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद तथा राजभाषा निदेशालय, डी आर डी ओ मुख्यालय ने संयुक्त रूप से 17 जनवरी 2013 को एकदिवसीय राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यशाला में हैदराबाद, बालासोर, कोलकाता आदि स्थलों पर स्थित डी आर डी ओ की विभिन्न प्रयोगशालाओं से आए 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया। श्री अदालत अली, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा सह-निदेशक, आर सी आई ने इस कार्यशाला का उद्घाटन किया। आपने सभी प्रकार के सरकारी काम में हिंदी के बेहतर कार्यान्वयन पर बल दिया। श्री सुनील शर्मा, निदेशक, राजभाषा, डी आर डी ओ मुख्यालय ने राजभाषा नीति के विभिन्न उपबंधों तथा मुख्य-मुख्य बातों पर चर्चा की।

श्री के राम शर्मा, डी यू एम एस तथा उपाध्यक्ष, ओ एल आई सी, आर सी आई ने श्री अदालत अली, श्री सुनील शर्मा तथा श्री राम निवास, सहायक निदेशक, राजभाषा निदेशालय, डी आर डी ओ मुख्यालय को स्मृति चिह्न भेंट किए। श्री राम निवास ने संसदीय राजभाषा समिति की निरीक्षण प्रश्नावली के महत्त्व तथा यूनिकोड के उपयोग विषय पर व्याख्यान दिया। श्रीमती सुमन अंथवाल, वरिष्ठ अनुवादक, राजभाषा निदेशालय ने तिमाही प्रगति रिपोर्टों के महत्त्व पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

श्री काजिम अहमद, वरिष्ठ हिंदी सहायक, आर सी आई ने उद्घाटन सत्र के दौरान सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। यह अभिमुखीकरण कार्यक्रम अत्यधिक प्रभावोत्पादक सिद्ध हुआ जिसमें व्याख्याताओं तथा प्रतिभागियों के बीच व्यापक पारस्परिक संपर्क स्थापित हुआ तथा विभिन्न प्रयोगशालाओं के हिंदी प्रकोष्ठों की समस्याओं पर भी चर्चा की गई। श्री आर जयसिंह, तकनीकी अधिकारी 'सी', आर सी आई ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

नियुक्तियां

मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (एच आर एंड एम), डी आर डी ओ मुख्यालय



डॉ जी मालाकोंडैय्या, विशिष्ट वैज्ञानिक ने 01 जनवरी 2013 से मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (एच आर एंड एम) का प्रभार ग्रहण किया है। डॉ मालाकोंडैय्या ने क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कॉलेज (वर्तमान में

एन आई टी), वारंगल से वर्ष 1973 में धातुकर्मीय अभियांत्रिकी विषय में बी ई की डिग्री प्राप्त की। बाद में आपने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बी एच यू) में दाखिला लिया तथा धातुकर्मीय इंजीनियरिंग विषय में एम टेक (1975) तथा पी एच डी (1980) की उपाधियां प्राप्त कीं। आपको उत्कृष्ट स्नातकोत्तर छात्र के रूप में स्वरूप जयंती पदक तथा एम टेक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए विश्वविद्यालय पदक से सम्मानित किया गया है। 1980-82 के दौरान आपने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के धातुकर्मीय विभाग में व्याख्याता के रूप में कार्य किया। वर्ष 1982 में आप रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद से जुड़े। आपने 1992-1994 के दौरान एन आर सी वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता के रूप में राइट पैटर्न एयरफोर्स बेस, ओहियो, संयुक्त राज्य अमेरिका में उन्नत टिटैनियम ऐलुमिनाइड विषय पर पोस्ट डाक्टरल अनुसंधान कार्य किया।

जून 2007 में डॉ मालाकोंडैय्या डी एम आर एल के निदेशक के पद पर आसीन हुए। बाद में जुलाई 2009 में आपको उत्कृष्ट वैज्ञानिक के रूप में पदोन्नति दी गई तथा जुलाई 2010 में आप विशिष्ट वैज्ञानिक बने। डी एम आर एल में डॉ मालाकोंडैय्या ने देश की एक अग्रणी श्रान्ति तथा विभंग यांत्रिकी प्रयोगशाला की स्थापना की। आपके अनुसंधान कार्य मुख्य रूप से उन्नत यांत्रिकी धातुकर्म के क्षेत्र से संबंधित रहे हैं जिसमें धातुओं तथा मिश्रधातुओं के संरचना-यांत्रिक गुणों के बीच सह-संबंध तथा विशिष्ट इस्पात को विकसित करने पर विशेष बल दिया गया। आपने अत्यधिक धातुमिश्रित 250 ग्रेड के मेरैजिंग इस्पात जो आपने आकर्षक सामर्थ्य-चर्मलता संयोजन के लिए जाना जाता है, के कम खर्च पर निम्न-मिश्रधातु विकल्प

को विकसित करने के लिए एक व्यापक अनुसंधान कार्यक्रम चलाया है। आपके अनुसंधान कार्यों के फलस्वरूप एक नया अति उच्च सामर्थ्ययुक्त तथा उच्च चर्मलता गुणों से युक्त निम्न मिश्रधातु इस्पात को विकसित किया जा सका है जिसे डी एम आर-1700 नाम दिया गया है। आकाश तथा अग्नि चरण-2 के बूस्टर मोटर आवरणों के संविरचन तथा सफल दबाव परीक्षण से मिसाइल आवरण के लिए उच्च मिश्रधातु युक्त मेरैजिंग इस्पात के स्थान पर प्रयोग में लाए जाने के लिए एक कम लागत के डी एम आर-1700 निम्न मिश्रधातु इस्पात का पता चला है।

आपके नेतृत्व में ए बी-श्रेणी के नौसेना इस्पातों के स्वदेश में उत्पादन की प्रौद्योगिकी सफलतापूर्वक विकसित की गई है। नौसेना के प्रयोग हेतु स्वदेश में विकसित इस्पात (डी एम आर-249ए और डी एम आर-249बी इस्पात) का कोचीन शिपयार्ड में निर्मित किए जा रहे पहले वायुयान कॅरियर के निर्माण हेतु चयन किया गया है। भारतीय नौसेना ने डी एम आर-249ए इस्पात के संदर्भ में नौसेना हेतु प्रयोग में लाए जाने वाले इस्पातों की अपनी आवश्यकताओं का युक्तिकरण किया है। आपके इन उल्लेखनीय योगदानों को मान्यता प्रदान करते हुए आपको डी आर डी ओ द्वारा वर्ष का वैज्ञानिक पुरस्कार (2000) तथा आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उत्कृष्टता हेतु अग्नि पुरस्कार (2005) से पुरस्कृत किया गया है। आपको एस ए आई एल (सेल) स्वर्ण पदक (1997), एम आर एस आई स्वर्ण पदक (1998), वी ए एस वी आई के पुरस्कार (2008) तथा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय द्वारा पूर्व छात्र पुरस्कार (2010) प्रदान किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, आपको वर्ष 1983 में भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (आई एन एस ए) द्वारा युवा वैज्ञानिक पदक, इस्पात तथा खान मंत्रालय द्वारा आपके द्वारा यांत्रिक धातुकर्म विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए वर्ष 1992 में प्रतिष्ठित राष्ट्रीय धातुकर्मी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।

निदेशक, डी एम आर एल के रूप में आपके कार्यकाल के दौरान इस प्रयोगशाला ने केरल मिनरल्स एंड मैटीरियल्स लिमिटेड (के एम एम एल), कोट्टम, केरल में 500 टन के टिटैनियम स्पंज संयंत्र को स्थापित किया है। एच ई एल, कोरापुट को संनिवेश संचकन प्रौद्योगिकी के अंतरण के हिस्से के रूप में जेट फ्यूल स्टार्टर (जे एफ एस), पायलटरहित लक्ष्यभेदी वायुयान इंजनों (पी पी ए ई) के अभिन्न संचकन तथा कावेरी ऐरोफॉयल संचकन का

सफलतापूर्वक उत्पादन तथा टाइप प्रमाणन किया गया है। उनके द्वारा पहले आरंभ किए गए नौसेना इस्पात कार्यक्रम से उच्चतर सामर्थ्य ग्रेड के इस्पात को विकसित करने में उत्पादन सहायता प्राप्त होती रही। वर्तमान में डी एम आर-249 ग्रेड के इस्पात को पनडुब्बियों के निर्माण हेतु प्रयोग में लाने के लिए प्रमाणीकरण की एक प्रमुख परियोजना चल रही है। आपके नेतृत्व में डी एम आर एल द्वारा प्राप्त की गई समग्र उपलब्धियों को मान्यता प्रदान करते हुए डी एम आर एल को वर्ष 2008 के लिए डी आर डी ओ टिटैनियम ट्रॉफी प्रदान की गई। आपको डी आर डी ओ प्रौद्योगिकी नेतृत्व पुरस्कार-2010 से पुरस्कृत किया गया है।

डॉ मालाकोंडैय्या ने मिश्रधातु निगम लिमिटेड के बोर्ड में निदेशक; ए आर सी आई, बालापुर, हैदराबाद की शासी परिषद् में सदस्य; जे एन ए आर डी डी सी, नागपुर की शासी परिषद् में सदस्य; वैमानिक पदार्थ परीक्षण प्रयोगशाला, हैदराबाद के शासी निकाय में सदस्य; एन एम एल, जमशेदपुर की अनुसंधान परिषद् में सदस्य; ए एम पी आर आई, भोपाल की अनुसंधान परिषद् में सदस्य; अनुसंधान परिषद्, एन आई टी, वारंगल में सदस्य; तथा जी आई टी ए एम विश्वविद्यालय के सलाहकार मंडल (एडवाइजरी बोर्ड) में सदस्य के रूप में भी कार्य किया है।

आपको 100 से भी अधिक तकनीकी शोध-पत्रों को प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त है। आपके मार्गदर्शन में पांच वाचस्पति (डॉक्ट्रेट) की उपाधियां प्रदान की गई हैं। आप आंध्र प्रदेश विज्ञान अकादमी तथा भारतीय राष्ट्रीय अभियांत्रिकी अकादमी के अध्येता हैं।

निदेशक, आई टी एम, मसूरी



डॉ शशि भूषण सिंह, वैज्ञानिक 'जी' ने प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आई टी एम), मसूरी के निदेशक का कार्यभार संभाला है। आपने भारतीय औद्योगिक अभियांत्रिकी संस्थान, बम्बई से औद्योगिक अभियांत्रिकी विषय में स्नातक की उपाधि प्राप्त की तथा आई आई टी, खड़गपुर से धातुकर्मीय अभियांत्रिकी विषय में पी एच डी की उपाधि प्राप्त की।

डॉ सिंह संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से वर्ष 1982 में वैज्ञानिक 'बी' के रूप में डी आर डी ओ से जुड़े तथा आपको वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (वी आर डी ई), अहमदनगर में तैनात किया गया जहां आपने

आई टी एम, मसूरी में कार्यभार ग्रहण करने से पहले लगभग 30 वर्षों तक कार्य किया। वी आर डी ई में अपने कार्यकाल के दौरान आपने रक्षा वाहनों तथा उनकी प्रणालियों के आद्यप्ररूपण हेतु उन्नत विनिर्माणकारी अवसंरचना स्थापित की। आपने अनेक ऑटोमोटिव पदार्थों नामतः धातु मेट्रिक्स कम्पोजिटों, बहुलकीय कम्पोजिटों, कवच, वाहनों में प्रयोग हेतु संचकों तथा विभिन्न प्रकार के बुलेट प्रूफ वाहनों को विकसित किया।

डॉ सिंह ने भावी इनफैंटरी संग्राम वाहनों (एफ आई सी वी) हेतु समर्थकारी प्रौद्योगिकियों के परियोजना निदेशक और साथ ही एकीकृत अनुकार प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला के परियोजना निदेशक के रूप में भी कार्य किया। आपने अनुवर्तित वाहनों हेतु आभासी आद्यप्ररूपण, हलके वजन की इन-आर्म निलंबन प्रणाली, अनुवर्तित वाहनों, कम्पोजिट सड़क पहियों, आघात प्रतिरोधी चालक सीटों आदि के लिए हाइड्रो जेट जैसी अनेक प्रौद्योगिकियों को विकसित किया है।

डॉ सिंह को अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया है जैसेकि बुलेटप्रूफ वाहनों को विकसित करने के लिए रक्षा प्रौद्योगिकी पुरस्कार; वर्ष का प्रयोगशाला वैज्ञानिक पुरस्कार तथा इंस्टिट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) से आजीवन उपलब्धि पुरस्कार। आपको वाहनों के लिए जी आर पी ईंधन टैंकों के विनिर्माण हेतु प्रक्रम एवं बैनेटिक इस्पात (वाहनों के ऊपरी आवरण अर्थात कवच अनुप्रयोग हेतु) के संबंध में नवोन्मेषी क्रियाकलापों के लिए दो पेटेंट प्राप्त हुए हैं। हाल ही में आपने अति कठोर पदार्थों के लिए वैद्युत तापन के माध्यम से तप्त मशीनन के प्रक्रम, उच्च टॉर्क (आघूर्ण) की आवश्यकता वाले क्रैंक शैफ्टों की असेम्बली के लिए हिमांक प्रक्रम (क्रायो प्रोसेस), अनुवर्तित वाहनों के लिए हलके वजन वाले कम्पोजिट सड़क पहिया (विश्व में पहली बार विकसित) से संबंधित अपने कार्य के लिए तीन अन्य पेटेंटों को भी दर्ज कराया है।

डॉ सिंह ने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं/सम्मेलनों में 32 तकनीकी लेखों को प्रकाशित कराया है तथा पुणे विश्वविद्यालय के बी टेक, एम टेक और पीएच डी छात्रों को मार्गदर्शन प्रदान किया है। आपने गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली में प्रवीणता भी प्राप्त की है तथा आप गुणवत्ता संस्कृति के प्रवर्तक और अनुशासित KAIZEN कर्ता हैं।

आप सोसाइटी ऑफ ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग, भारतीय धातु संस्थान के आजीवन सदस्य, इंस्टिट्यूट

ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) के अध्यक्ष सदस्य तथा इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ फाउंड्रीमेन के सदस्य हैं। आप पुणे विश्वविद्यालय के धातुकर्म विषयक बोर्ड ऑफ स्टडीज के सदस्य तथा अकादमिक संस्थानों के संबंध में राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड (एन बी ए) के विशेषज्ञ मूल्यांकनकर्ता हैं।

नवंबर 2011 से अक्टूबर 2012 के दौरान आपने इंस्टिट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), अहमदनगर स्थानीय केंद्र के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया है तथा अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया।

स्थापना दिवस / वार्षिक दिवस समारोह

नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि



दीप प्रज्वलित करते हुए श्री के जयकुमार।

नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि ने 14 दिसंबर 2012 को अत्यधिक उमंग तथा उत्साह के साथ अपना वार्षिक दिवस समारोह आयोजित किया। तुनचतु ऐजुताचन मलयालम विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री के जयकुमार, आई ए एस (सेवानिवृत्त) इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए थे। अपने उद्घाटन भाषण में आपने रक्षा अनुसंधान तथा विकास के क्षेत्र में एक ब्रांड नाम सृजित करने में एन पी ओ एल के समर्पित प्रयासों की प्रशंसा की। आपने संगठनात्मक उत्कृष्टता के लिए प्रबंधन के सभी क्षेत्रों में "संयोजकता" स्थापित करने के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला तथा समाज में व्यापक रूप से परिवर्तन लाने के लिए कार्य करने हेतु प्रत्येक व्यक्ति के योगदान की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री एस अनंतनारायण, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, एन पी ओ एल ने तकनीकी तथा गैर-तकनीकी दोनों क्षेत्रों में संगठन की उपलब्धियों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया तथा आगामी वर्ष के लिए एन पी ओ एल द्वारा निर्धारित की गई नई प्रतिबद्धताओं का उल्लेख किया। प्रयोगशाला के चुनिंदा वैज्ञानिकों तथा क्रीड़ा कार्मिकों के संगठन को प्रदान की गई उल्लेखनीय सेवा के लिए पुरस्कृत किया गया।

नौसेना पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एन एम आर एल), अंबरनाथ



पुरस्कार विजेताओं के साथ डॉ हस्तक (दाएं से तीसरे)

नौसेना पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एन एम आर एल), अंबरनाथ ने 05 जनवरी 2013 को अपना प्रयोगशाला स्थापना दिवस समारोह आयोजित किया। डॉ आर एस हस्तक, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, एन एम आर एल ने इस समारोह की अध्यक्षता की। संबंधित परियोजना निदेशकों तथा समूह प्रमुखों द्वारा प्रयोगशाला के तकनीकी क्रियाकलापों तथा उपलब्धियों के बारे में प्रस्तुतीकरण दिया गया। अपने भाषण में डॉ हस्तक ने पूर्ववर्ती वर्ष के दौरान एन एम आर एल की तकनीकी उपलब्धियों के बारे में बातचीत की तथा इस बात पर बल दिया कि वर्ष 2013 में उत्पाद विकास, सुरक्षा अभियांत्रिकी एवं कल्याण क्रियाकलापों पर अधिक बल दिया जाएगा। इस अवसर पर डॉ हस्तक द्वारा प्रयोगशाला के मेधावी कर्मचारियों को विभिन्न प्रयोगशाला स्तरीय तथा नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। 25 वर्ष की सेवा पूरी कर चुके कर्मचारियों को भी सम्मानित किया गया।

इस समारोह में एन एम आर एल से सेवानिवृत्त हुए कर्मचारियों को भी आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर आयोजित किए गए एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों ने विविध कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

डी आर डी ओ की प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे



मेजर जनरल शंकर को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए श्री दातार।

10 दिसंबर 2012 : मेजर जनरल पी आर शंकर, वी एस एम, ए डी जी, आर्टिलरी (ए) और उनकी टीम। श्री ए एन दातार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, ए आर डी ई ने स्थापना के दौरे पर आए अतिथियों के समक्ष प्रयोगशाला में चल रही परियोजनाओं की एक संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की। इस दौरान ई आर आर 122 मिमी रॉकेट, पिनाका मेक-II, ए टी ए जी एस, दाहक स्फोट शीर्ष, पिनाका के लिए ई टी फ्यूज, प्रक्षेप-पथ संशोधन विषय पर प्रस्तुतीकरण भी दिए गए।

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे

10 दिसंबर 2012 : मेजर जनरल पी आर शंकर, विशिष्ट सेवा मेडल, ए डी जी आर्टिलरी (ए), ब्रिगेडियर संजीव चौधरी, उपमहानिदेशक, आर्टिलरी (उपकरण) तथा कर्नल जैड आई एस याजदानी, एस एम, निदेशक, आर्टिलरी-13.

17 दिसंबर 2012 : रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव तथा डी आर डी ओ के महानिदेशक डॉ वी के सारस्वत। आपने एच ई एम आर एल में नोदक प्रक्रमण भवन की आधारशिला रखी।

संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई



अर्जुन एम बी टी अनुकारक प्रशिक्षण केंद्र में दौरे पर आए अधिकारीगण।

03 दिसंबर 2012 : लेफ्टिनेंट जनरल नरेंद्र सिंह, अति विशिष्ट सेवा मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल, सेवा मेडल, डी सी ओ ए एस (पी एंड एस) तथा लेफ्टिनेंट जनरल एच एस कुलकर्णी, बार टू वी एस एम, डी जी एम एफ (नामित)।

इलैक्ट्रॉनिक्स तथा रडार विकास स्थापना (एल आर डी ई), बेंगलूर

28 दिसंबर 2012 : डॉ डी एन रेड्डी, अध्यक्ष, भर्ती तथा मूल्यांकन केंद्र (आर ए सी)।

आभार

डी आर डी ओ समाचार का सम्पादक मंडल वर्ष भर नियमित रूप से प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं से संबंधित समाचार भेजने के लिए सभी संवाददाताओं, राजभाषा अधिकारियों, तथा प्रबुद्ध निदेशकगणों का आभार व्यक्त करता है।

मुख्य सम्पादक
सुरेश कुमार जिंदल

सम्पादक
फूलदीप कुमार

सम्पादकीय सहायक
अशोक कुमार

मुद्रण
एस के गुप्ता
हंस कुमार

विपणन
आर पी सिंह

श्री सुरेश कुमार जिंदल, निदेशक, डेसीडॉक द्वारा डी आर डी ओ की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित

प्रकाशक : डेसीडॉक, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054 ; दूरभाष : 011-23812252 ; फैक्स : 011-23902500 ; ई-मेल : director@desidoc.drdo.in